IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उदात्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व:पं. सुधाकर शुक्ल

डॉ. श्रीमती जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याताए
संस्कृतए पालि एवं प्राकृत विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालयए जबलपुर

मस्तिष्क में अनेक शक्तियां हैंए वे सब मिलकर साहित्य को जन्म देती हैं। इन शक्तियों में जब अनुभूति प्रधान होती है तब काव्य का जन्म होता है। काव्य मस्तिष्क की उन प्रवृत्तियों का प्रकटीकरण है जो संवेदनात्मक होती है। मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति काव्य है। महाकवि सुधाकर शुक्ल का जीवन चरित हिन्दी संस्कृत साहित्य के सृजनात्मक स्वरूप से मंडित है। उनके सम्पूर्ण जीवन चरित में मानवीय गुणों एवम् साहित्यिक क्षमताओं का समाहार था। श्री शुक्ल जी का जीवन एवम् कृतित्व मानवए कवि साहित्य और संस्कृति के लिए एक आदर्श हैए एक प्रेरणा है। मानवीय एवम् साहित्यिक जीवन जीने का एक भरपूर कोष है।

जन्म एवम् व्यक्तित्व

महाकवि श्री सुधाकर शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जनपद में यमुना तट पर बसे क्योटरा ग्राम में श्रावण शुक्ल द्वादशी बुधवार संवत् 1870 वि. में हुआ था। पिता श्री रघुवंशी लाल शुक्लए प्रसिद्ध पहलवान एवम् श्रीमद्भागवत पुराण के प्रवक्ता थे। पितामह श्री सूर्य प्रसाद शुक्ल व्याकरण एवम् तंत्र के पंडित थे। माता श्रीमति जनकदुलारी थीं।

भारती स्वयंवरम् महाकाव्य में कवि ने अपने को कान्यकुब्ज कुल में प्रसूत तथा कालिंद नंदिनी यमुना के पुलिनो पर विहार करने वाली अलकापुरी में जन्म लेने वाला काव्य साधक घोषित किया है –

कान्यकुब्जे कुले जात: कालिन्दी कूलकेलिकृत।
अलका तिलक: काव्यं साधयामि सुधाकर:।।

श्री शुक्लजी ने अपने खण्डकाव्य देवदूतम् के उत्तरार्ध में अपने जन्मस्थान अल्काग्राम का उल्लेख किया हैए जिसमें संस्कृत के पंण्डितों और विद्वानों का बाहुल्य बताया है और जिसे अपनी जन्मभूमि कहा है –

अद्यग्रामो वसति रसति त त्र कैवर्तकाना-

मस्मादाख्याऽप्यभवदपराऽप्यस्य कैवर्तकाद्या

ब्राम्ही-जिम्ह-ज्वर-हर-गुरू:पंडितैर्मण्डित श्री:

क्लिश्यत्काश्य प्रमतिरवनिर्याऽस्य काव्यस्य कर्तु:।।

श्री सुधाकर शुक्ल का जन्म से बद्रीदयाल नाम रखा गया था कालान्तर में श्री बद्रीदयाल शुक्ल को अपने रचना संसार में श्री सुधाकर शुक्ल की संज्ञा प्राप्त हुई। शास्त्रीय परम्परा से प्रथमाए मध्यमाए शास्त्रीय काव्यतीर्थ की उपाधियों को प्राप्त करए आधुनिक परम्परा से हाईस्कूलए इंटरए बी.ए.ए एम.ए. संस्कृत की उपाधियां भी श्री शुक्ल जी ने प्राप्त की। 1941 से 1972 तक 31 वर्ष शिक्षण एवं प्रशासन कार्य किया। मां पीताम्बरा एवं स्वामी महाराज के दर्शन से प्रभावित एवं प्रेरित होकर अपना स्थायी निवासए अपनी साधना स्थली दतिया ;म.प्र.द्ध को ही बना लिया जो कविकुलाय के नाम से विख्यात है। व्रती विद्वान और कृति साहित्यकार श्री सुधाकर शुक्ल ने कार्तिक शुक्ल नवमी सम्वत् 2042 दिन बुधवार को सायं 7रू40 पर भावयोग में चिर समाधि ले ली थी।

विद्यातु सैव सरलम सरलेन तेनए

यमिल येदर मिमं ह्यपरत्वविद्याए

गंतव्य मस्ती खलु यत्र न यात्रविद्याए

तामेव पाठ्य यायाप्यध तत्तु विद्याम् ।।

विद्या तो वही है जो सरल ;आत्माद्ध को सरल ;परमात्माद्ध से शीघ्र मिला दे और शेष दूसरी अविद्या हैए फिर अन्त में जहां सभी को जाना है वहां जो विद्या है उसी को सिखाइए जिससे मैं उस परब्रह्म को जानूंए की अंतिम भावना करते हुए सरल ;आत्माद्ध को उस सरल ;परमात्माद्ध में विलीन कर दिया। दतिया में करन सागर तट पर श्री शुक्ल जी की स्मृति समाधि स्थित है जो उनके उदात्त जीवन के महाकाव्य का निर्वेद में पर्यावसान का संदेश देती है।

श्री सुधाकर शुक्ल का कृतित्व

संस्कृत साहित्य की समृद्धि के लिए श्री सुधाकर शुक्ल जी ने एक विशाल साहित्य का सृजन किया है। इनमें तीन महाकाव्यए एक खण्ड काव्यए दो मुक्तक काव्यए एक स्त्रोत काव्यए एक नाटिकाए एक सूत्रोपनिषदए एवं रोटिकार्या काव्य भी है।

- ***स्वामिचरितचिन्तामणि: महाकाव्य*** – अठारह सर्गों में 1120 एक हजार एक सौ बीस श्लोकों के माध्यम से श्रद्धाए भक्ति और ज्ञान की सार्थक एवं कल्पनात्मक अनुभूतियों की सरस अभिव्यक्ति है।
- ***गांधी सौंगन्धिकम् महाकाव्य*** – बीस सर्गों में विरचित राष्ट्रपिता गांधी के जीवन दर्शन का उद्घाटन करने वाला सर्वांगीण सामाजिक जीवन मूल्यों की सुरक्षा का एक ऐतिहासिक महाकाव्य है। यह क्लिष्ट अलंकारोंए से मुक्तए व्याकरण सम्मत सुन्दर पदए भाव व रस से पूर्ण आदर्शोन्मुख काव्य है।
- ***भारतीस्वयंबरम् महाकाव्य*** – बारह सर्गों में स्वतंत्र भारत के युवक युवतियों को प्रगतिशीलताए मानवीयता और राष्ट्रीयता का संकल्प कराने वाला प्रेरक यथार्थ पर आधारित कल्पनाप्रधान महाकाव्य है।
- ***देवदूतम् खण्डकाव्य*** . देवदूतम् के पूर्वार्द्ध में 60 श्लोक एवं उत्तरार्द्ध में 77 श्लोक हैं। देवदूतम् का पूर्वार्द्ध भारतीय राष्ट्रीयता की रक्षा काए मातृभूमि की सुरक्षा का आव्हान है। वहीं उत्तरार्द्ध लोकहित एवं राष्ट्र कल्याण से ओतप्रोत है।
- ***आर्या सुधाकरम् मुक्तककाव्य*** – 1500 से भी अधिक आर्या छन्दों में निबद्ध कवि की स्वानुभूति का विशाल संग्रह है।
- ***केलिकलशम् मुक्तककाव्य*** . श्रंगारपरक मुक्तक काव्य में कवि ने अपनी अनुभूतियों को नवीन कल्पनाओं के साथ व्यक्त किया है।
- ***दुर्गादिवनम् स्त्रोत काव्य*** – मां दुर्गा की वन्दना विषयक 51 शिखरिणी वृत्तों में निबद्ध स्त्रोत काव्य है।
- ***इन्दुमति नाटिका*** – इसमें चार अंकीय रघुवंश महाकाव्य के कथानक का आधार लेते हुए कथा में परिवर्तन कर मौलिकता से नवीनता का संचरण किया है।
- ***सूत्रोपनिषद्*** – सूत्र शैली में निबद्ध इंदिरा गांधी के 20 सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम का रूपान्तरण है।
- ***रोटिकार्या*** – इस काव्य की रचना रोटिका की जीवन में श्रेष्ठता एवं महत्ता प्रतिपादित करने के लिए की गई है जो कि सत्य के निकट है।

श्री सुधाकर शुक्ल के हिन्दीए संस्कृत साहित्य पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओंए गोष्ठियोंए आकाशवाणी आदि के माध्यम से भी विवेचन हुआ है। उनके हिन्दी काव्य कसक को विन्ध्यप्रदेश शासन का ईसुरी पुरुस्कारए किरनदूत पर मध्यप्रदेश शासन का लाल पुरुस्कार मिला। श्री सुधाकर शुक्ल के साहित्यिक योगदान का सारस्वत सम्मान मध्यप्रदेश शासन ने साहित्य परिषद के माध्यम से 21 मार्च 1978 में किया थाए जिसमें देश के संस्कृति विद्वानों ने उनके जीवन एवं कर्तृत्व का मूल्यांकन किया था। अपने पुष्कल कृतित्व के माध्यम से श्री सुधाकर शुक्ल जी ने हिंदी . संस्कृत की प्रतिष्ठा एवं उसके व्यापक प्रभाव का पोषण एवं प्रसारण किया है।